।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

''आध्यात्म संवाद'' का दूसरा दिन
दो विरोधी तत्त्वों के मिलने से ही प्रकाश पैदा होता है – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 7 मार्च : राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने जैनिज्म और सूफीज्म की समानता पर आयोजित आध्यात्म संवाद के दूसरे दिन कहा कि अनेकांत एक ऐसा तत्त्व है जो दो विरोधी धर्मो का समन्वय करता है। दो विरोधी तत्त्वों के मिलने से ही प्रकाश पैदा होता है। सूफी और जैन दो अलग–अलग धाराएं है। दोनो में विरोध झलकता है, पर यह विरोध लड़ाई कराने वाला नहीं है। इस विरोधी लगने वाले धर्मो में समन्वय होने पर प्रकाश पैदा होगा और यह प्रकाश विश्व शांति स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। आचार्य महाप्रज्ञ ने सूफी समुदाय के दिग्गजों के बीच कहा कि हमने अहिंसा यात्रा के दौरान जब गुजरात के दंगों का समाधान दे रहे थे तब सभी धर्मों के समन्वय हेतु सबकी सहमती से नियम बनाएं थे। वे नियम थे कि किसी भी धर्म के उत्सवों में व्यावधान नहीं ढाला जायेगा और किसी भी धर्म का अनादर नहीं किया जायेगा। इस नियम के कारण अहमदाबाद में निकलने वाली ऐतिहासिक रथ यात्रा शांतिपूर्वक निकाली गई और उस यात्रा में हम खूद सम्मलित होकर सौहार्द का वातावरण बनाने का प्रयास किया। उन्होने कहा कि उस समय सभी धर्मों के अनुयायियों ने हमारे सुझावों को माना जिससे दंगों पर नियंत्रण स्थापित किया जा सका। किसी एक व्यक्ति के अपराध को समूचे सम्प्रदाय का अपराध मान लिये जाने के कारण दंगे किये जाते है। इसके लिए जरुरी है कि व्यक्ति विशेष के अपराध का बदला पूरे समुदाय से न लें। उन्होने कहा कि दो विरोधी धर्मों का समन्वय नहीं होता है इसलिए दंगे होते है। आज से समन्वय का जो कार्य प्रारंभ हुआ है वह एक अभियान का रुप लें तो साम्प्रदायिक दंगों का नाम ही समाप्त हो जायेगा।

अजमेर दरगाह के सर्वेसर्वा पीर फकरु मियान चिस्ती सबरी ने कहा कि मुझे खुशी है कि खुदा ने हमें भारत भूमि पर पैदा किया है। इस भूमि पर अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। उनसे हम आदर से मिलते हैं। हम आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य मे हुए इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम से इंसानियत से जीना सीखें। जिससे विश्व शांति स्थापति हो सकेगी। आगरा दरगाह के प्रमुख अब्दुल उल्लाही ने कहा कि सूफी और जैन दोनों के ही मकसद एक ही है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस मंच से नई राह दिखाई है। वह राह है प्रेम की, भाई चारे की। हमारे दोनों धर्मों में विचारों की समानता है। इस समानता से देश की तरक्की होगी और अमन चैन स्थापित होगा। सूफी संत शमशी तेहरानी ने कहा कि जैन धर्म नहीं एक विचार है, कॉन्सेप्ट है। जिसको प्रत्येक धर्म का अनुयायी अपना सकता है। जैन धर्म ने ही भारत की संस्कृति को जिंदा रखा है। इस धर्म के सिद्धांतों को जीने वाले मुनियों ने भारत को विषम परिस्थितियों से उभारा है। उन्होने आचार्य महाप्रज्ञ की अगुवाई में सर्वधर्म सद्भाव की दिशा में अपने आपको नियोजित करने का संकल्प व्यक्त किया। जैन दर्शन के विद्वान प्रो. सागरमल जैन ने कहा कि जो धर्म आदमी को आदमी बनाता है वह धर्म है और जो हैवानियत की तरफ ले जाता है वह अधर्म है। मुनि अभितीत कुमार ने अनेकांत दर्शन पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सत्य को समग्र दृष्टि से देखने का माध्यम अनेकांत है। उन्होने जैन दर्शन और सूफी दर्शन दोनों में साधना पद्धती स्वीकृत होने की बात कही। मुनि दिनेश कुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित ''शांति का संदेश'' को स्वर किया। मुम्बई के भंवरलाल कर्णावट ने अपने विचार व्यक्त रखे। प्रवास व्यवस्था समिति की तरफ से सूफी संतों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। अमृतवाणी की तरफ से आचार्य महाप्रज्ञ के अजमेर दरगाह में पधार्पण

क्रमश : 2

के दृश्यों से सुसज्जित सी.डी. सेट सूफी संतों को भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

(2)

सूफी संतो ने किया आचार्य महाप्रज्ञ का सम्मान

कार्यक्रम में मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ का सूफी समाज के दिग्गज संतों ने विशेष तौर पर निर्मित प्रतीक चिन्ह को भेंट कर सम्मान किया। इस प्रतीक चिन्ह में सूफी समुदाय का मोनोग्राम था जिसमें समुदाय की विशेष पहचान की मोहर लगी हुई थी। इस्लाम की परम्परा के अनुसार सूफी सेय्यद शफी वासन ने पद क्रम में सबके हाथों में देते हुए प्रमुख धर्म गुरु के हाथों आचार्य श्री को समर्पित करवाया। इस दृश्य को देख श्रद्धालु भावविभोर हो गये। वासन ने कहा कि यह प्रतीक चिन्ह हमारे सभी के दिल का टुकड़ा है, जो हम आचार्यश्री महाप्रज्ञ की मानवीय संवेदनाओं को समर्पित कर रहे हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव का अद्भूत नमूना प्रस्तुत करने वाला यह प्रतीक चिन्ह जैसे ही आचार्य महाप्रज्ञ के करकमलों में पहुंचा तो जन समुदाय ने दोनों हाथ ऊपर कर ओम् अर्हम् की ध्वनि के साथ अपना हर्ष प्रकट किया।

गुरु शिष्य संबंधों पर हुई चर्चा

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा और सूफी समुदाय के दिग्गजों की उपस्थिति मे चले इस आध्यात्म संवाद में गुरु–शिष्य संबंधों पर चर्चा हुई। जैन दर्शन में प्रस्तुत इस विषय के तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि गुरु शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। सभी धर्म परम्परा में गुरु–शिष्य संबंधों को मान्य किया है। उन्होने कहा कि गुरु–शिष्य परम्परा आलौकिक संपदा है। गुरु भीतर के अज्ञान को मिटाते हैं और अन्तर चेतना को जागृत करते है। शिष्य का कर्तव्य हेाता है कि वह गुरु के प्रतिकूल व्यवहार न करें। मुख्य नियेाजिका साध्वी विश्रुतविभा ने भगवान महावीर वाणी में प्रयुक्त शिष्य के प्रशिक्षण सूत्रों को विस्तार से बताया। सूफी दर्शन में प्रस्तुत गुरु–शिष्य परम्परा पर सूफी सैया मुसा निजामी ने अपने विचार रखे।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक